G.G.S.S.S PREM NAGAR NEW DELHI

SCHOOL ID 1516030

ACTIVITY PLAY & SCRIPT WRITING

THEME AN IMPORTANT EVENT OF GURU TEG BAHADUR

ACTIVITY MONTH - OCTOBER 2021

NAME - TRIPTI SHARMA

CLASS & SECTION - 10th C

ID - 2017002O973, DOB - 23-7-2006

FATHER'S NAME - PREMPRAKASH SHARMA

CONTACT NO - 9971662175

पात्र :- वर्णनकर्ता, गुरू तेग बहादुर, गुरू तेग बहादुर की माँ, गुरू तेग बहादुर जी के मुरू, ग्रामीण, मसंत नवाब सैफ खान

वर्णनकर्ता :- यह कहानी ऐसे युवक की है जिसका नाम तेग बहादुर था। वह गुरू के घर में एक आध्यात्मिक राजकुमार थे।उनके चार बड़े भाई और एक बड़ी बहन थी। उनके पिता छठवें गुरू हरगोंविद थे और उनकी माँ माता नानकी थी। उनकी माँ नानकी ने हमेशा देखा कि उनका कोई दोस्त नही था।

माँ :- जब भी मेहमान आते हैं चारो भाई उचित राजकुमारो की तरह व्यवहार करते हैं लेकिन मेरा सबसे छोटा बेटा तेग बहादुर कुछ नहीं करता। वह सिर्फ इधर-उधर घूमते हुए आश्चर्य करता रहता है।

वर्णनकर्ता :- एक माँ के रूप में वह चाहती थी कि उनका बेटा नेता बनें क्योंकि वह उनका सबसे लाडला व छोटा बेटा था।

माँ :- बाबा गुरूदेव हर चीज का ख्याल रखते थे। वे न केवल एक संत थे बल्कि एक महान योद्धा भी थे। वे निश्चित थे कि वे अगले गुरू बनेंगे और नानक की संतान के साथ सिंहासन पर विराजमान होंगे। मुझे उन पर बहुत गर्व है हालाकि अगले गुरू बनने से पहले ही उन्होंने अपना शरीर त्याग दिया।

गुरूजी :- ऐसे संत के दर्शन पाकर मैं धन्य हूँ। अब मेरी सारी समस्याएँ दूर हो जाएंगी।

माँ :- अब जब गुरूदेव चला गया है तो दूसरा बेटा सूरजमल है। वह भी बहुत कुछ जानता है। उसे घर की देखभाल भी अच्छे से करनी आती है। उसे सब पसंद भी करते हैं। काश! मेरा सबसे छोटा बेटा तेग बहादुर दूसरे भाइयों जैसा

मुझे गर्व महसूस करा सकता। ऐसा लगता है कि उसे दुनिया में कुछ पसंद नहीं है।

वर्णनकर्ता :- उसके जैसी आध्यात्मिक महिला को समझ नहीं आया कि उनका बेटा कितना गहरा था उसे ये भी समझ नहीं आया कि उनके पति उसे इतना सम्मान क्यों देते हैं ? तेग बहादुर न बोलते थे, न ऊपर देखते थे। वह दोनों हाथ जोड़कर अपने गुरू के चरणों मे देखते थे।

गुरुजी :- यहाँ आओ बेटा। मेरी बगल में बैठो। बाँहों को हिलाते हुए – बेटा यहाँ आओ मेरी गोद में बैठो।

माँ :- गुरुजी तेगबहादुर को अन्य भाइयों से ज्यादा सम्मान देते थे मुझे यह बात समझ नहीं आती। अगली बार जब मुझे मौका मिलेगा तो मैं उनसे इसके बारे में जरूर पूछूंगी। यही तो एक बात है। जो मुझे बिल्कुल समझ नहीं आती। हे गुरू! मेरी मदद करो। मेरे सबसे छोटे बेटे तेगबहादुर को समझने में मेरी मदद करो। वे बहुत ही सरल हैं। आपके पास अन्य बेटे भी तो हैं जो ज्यादा जागरूक हैं। मंत्री भी तेगबहादुर को ज्यादा सम्मान देते हैं।

गुरुजी :- आपको लगता है कि वो सरल है पर आपकी सोच सरल है। आपको लगता है कि वो कुछ नहीं जानता पर वह तो सब कुछ जानता है। वह इसलिए चुप रहता है क्योंकि उसके हृदय में धैर्य बसा हुआ है।

माँ :- गुरुजी ! मुझे एक बात समझ नहीं आती मेरा सबसे छोटा बेटा तेगबहादुर हमेशा अकेला क्यों रहता है ? आप उससे इतना स्नेह क्यों रखते है ? क्यों आपको उसमें कुछ अच्छे गुण दिखते है ?

गुरुजी :- आपको लगता है कि तेगबहादुर में अच्छे गुण नहीं है पर उसके अन्दर तो सभी अच्छे गुण है

इसलिए वह चुप रहता है और सम्मान का पात्र है। तेग बहादुर जैसा कोई और शिष्य नहीं है।

माँ :- धन्यवाद गुरुजी ! आप उस पर अपनी कृपा बनाए रखिए।

वर्णनकर्ता :- भाई माखन जी साहब को गुरुजी के चरणो मे रहते हुए काफी समय हो गया था। उसने व्यवसाय को देखने के लिए गुरुजी से आज्ञा ली और उनका आशीर्वाद लेकर चला गया। लोगों को जैसे ही पता चला गुरु तेग बहादुर जी नया नगर शकनान जी बना रहे है तो आस-पास के लोगों मे खुशियों की लहर दौड़ गई। श्रद्धालु जन रोज गुरु साहब जी की सुन अमृतबानी सुनने के लिए पहुंचने लगे और नगर निर्माण के लिए अपनी आय का दसवाँ हिस्सा देने लगे। धीरे-धीरे गुरुसाहब का नाम चारो तरफ फैलने लगा। अभी शकनान जी नगर बस ही रहा था कि तभी एक मसंत गुरुजी से मिलने पहुँचे और उन्होने कहा -

मसंत :- गुरु साहब ! कृपा करे ! पूर्व दिशा के गंगा किनारे के नगरो मे अपने चरण डाले। वहा की संगत आपके दर्शन की अभिलाषी है। वहाँ बहुत समय से कोई गुरुजन प्रचार करने नही आया है। कृपा करे गुरुवर ! कृपा करे !

वर्णनकर्ता :- गुरुजी को यह भी संदेश मिल रहे थे कि औरंगजेब ने हिंदु जनता का दमन करने के लिए कड़ी नीतियों की घोषणा की है जिस कारण जनसाधारण का जीना मुश्किल हो गया था बहुत-सी जगहो पर बगावत का शोर सुनाई देने लगा था। ऐसे मे गुरुसाहब ने लोगों में जागरूकता लाने के

लिए विविध्य क्षेत्रों में प्रचार दौरों का मन बनाया। इन दिनों गुरूसाहब शाकनान जी नगर का निर्माण करवा रहे थे किन्तु गुरूजी ने पहले पीड़ित लोगों की मदद करने की ठानी। उनका मानना था कि यदि समय रहते जनता का मनोबल नहीं बढ़ाया गया तो दुष्ट अत्याचारी शासक वर्ग क्रूरता पर उतर आएँगे। गुरूजी अपनी पत्नी, माता और साले के साथ दौरे पर निकले। सबसे पहले गुरूजी कीरतपुर में ठहरे। वहाँ कुछ समय पहले से लोग बाढ़ के कारण गरीबी और तंगहाली में जी रहे थे। गुरूसाहब ने लोगों की आर्थिक मदद भी की। अब गुरूजी बालुवाल पहुँचे वहाँ उनको प्यास लगी। उन्होंने लोगों से पानी माँगा, तब लोगों ने उनसे कहा-

ग्रामीण :- माफ करें गुरूजी! गाँव के सारे कुओं का पानी खारा है। मैं पास के गाँव से मीठा पानी ले आता हूँ।

गुरू तेग बहादुर :- कोई बात नहीं, आप मुझे यही के कुएँ का खारा पानी दे दीजिए। यह पानी तो मीठा है।

वर्णनकर्ता :- गुरूजी की बात सच साबित हुई और गाँव के सारे कुएँ मीठे पानी में बदल गए। आगे बढ़ते हुए गुरूजी पटियाला के बहादुर गढ़ में पहुँचे। वहाँ गुरूजी एक बाग में ठहरे जिसका नाम पंचवटी था। नवाब सैफ खान गुरूजी से वहाँ मिलने आए और कहा-

नवाब सैफ खान :- गुरू साहब! कृपा करके आप हमारे महल में चलिए जिससे हमारे परिवार के लोग भी आपके दर्शन कर सकें।

वर्णनिकर्ता :- असलियत में नवाब गुरुजी को इसलिए अपने महल में बुलाना चाहते थे ताकि बुर्का और पर्दे में रहने वाली महिलाएँ भी गुरुजी के दर्शन कर सके। गुरुजी कुछ दिन नवाब सैफ खान के महल में ठहरे। वहाँ पर मस्जिद के चबूतरे पर बैठकर उन्होंने लोगों को गुरुवानी सुनाई। एक बार नवाब ने गुरुजी से पूछा —

नवाब सैफ खान :- गुरुवर ! मुझे किस प्रकार अपना जीवन व्यतीत करना चाहिए।

गुरु तेग बहादुर :- हे काफिर अर्थात अचेत मनुष्य तू पापो से बचा रहे। इन्ही पापो से बचने के लिए तू उस परमात्मा की शरण में चला जा जो गरीबों पर दया करते हो और सारे डर दूर करता हो। हे अचेत मनुष्य ! तू उस परमात्मा का नाम अपने हृदय मे पिरोए रख जिसके गुण वेद-पुराण आदि धार्मिक ग्रंथ गा रहे हो। हे मनुष्य ! पापो से मुक्ति दिलाने वाला नाम एकमात्र परमात्मा ही है। तू उस परमात्मा को सिमर-सिमर कर अपने सारे पाप दूर कर ले। हे काफिर मनुष्य ! तू दोबारा मानव शरीर नही पाएगा। क्यो तू इसे पाप कर-करके गँवा रहा है। यही समय है मुक्ति प्राप्ति का। इस पश्चात गुरुजी अपनी अगली यात्रा पर निकल गए।

धन्यवाद।

for HOS/VICE PRINCIPAL G.G.S.S.S. PREM NAGAR